बी0टी0सी0 (चतुर्थ सेमेस्टर) कक्षा–शिक्षण विषयवस्तु
(सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए)
हिन्दी
पाठ–1
अनिवार्य संस्कृत में अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण, वाचन एवं लेखन।

उद्देश्य–

- शुद्ध उच्चारण के साथ अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग की दक्षता विकसित करना।
- अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग का शुद्ध वाचन लेखन की योग्यता विकसित करना।
- छात्रों को व्याकरण की सहायता से शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा को व्यवहार में लाने के लिए समर्थ बनाना।
- शुद्ध तथा अशुद्ध का युक्तिसंगत विवेचन करने की क्षमता विकसित करना।
- अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग का शुद्धता के साथ अंतर कर सकने की क्षमता ।

➢ संस्कृत में व्याकरण का विशेष महत्व है, क्योंकि व्याकरण से ही भाषा परिष्कार होता है। यह शब्दों की व्युत्पत्ति परक विवेचना करता है। व्याकरण के शुद्ध उच्चारण व लेखन से ही अभ्युदय तथा निःश्रेयस की प्राप्ति होती है। बच्चे हिन्दी में भी करते हैं लेकिन कहाँ पर इसका उचित प्रयोग किया जाय इसके लिए शिक्षक बच्चों को इसका उच्चारण कराकर व लिखवाकर इसका बोध सरलता से कर सकते हैं। जैसे –पंचम्, कृष्णः

➢ जब स्वरों के उच्चारण में वायु मुख के साथ–साथ नासिका से भी निकलती है तो वह स्वर अनुनासिक कहा जाता है जैसे– अंश, पँच, अ, आ, ई ऊँ, एँ आदि। इसमें पंचम् अक्षर हर वर्ग का आता है।

➢ **शिक्षण सामग्री**–चार्ट मॉडल, कार्ड।

➢ **शिक्षक द्वारा**–सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से वार्तालाप के माध्यम से इनसे जुड़े शब्दों पर विस्तृत चर्चा करें तथा उसके अलग–अलग उच्चारण करके उनमें अन्तर को स्पष्ट करें जिससे बच्चे शुद्ध बोल व लिख सकें। जैसे–दंपति, पंत, संपत।

➢ इसी प्रकार हलन्त पर बातचीत कर बताया जाय कि स्वतंत्रियों में कम्पन होकर यह नादस्वर उच्चरित होता है। यह शब्द के अंत में (व्यंजन) जब व्यंजन को आधा बताना हो तब हलन्त का प्रयोग करते हैं, क्योंकि अन्तिम अक्षर कभी भी आधा नहीं लिखा जा सकता है। इसी तरह नपुंसक लिंग के सभी शब्द में म् लगाकर हलन्त लगाकर इसे लिख सकते हैं। जैसे–लट्टु

➢ विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन लगाने से इसमें ध्वनिगत वागदानम् परिवर्तन होता है। विसर्ग सदैव किसी न किसी स्वर के बाद होता है। इसका वाचन करते समय अंत में अहः आता है। जैसे–रामावतारः, सरोजः, सुरेन्द्रः पावकः। यह कभी दो शब्दों के बीच में भी लगता है। जैसे–दुःख अधःपतन, अन्तःकथा। इसके शुद्ध उच्चारण के साथ शिक्षक आगमन निगमन विधि द्वारा बच्चों को सरलता से स्पष्ट कर सकता है। जैसे उदाहरण देकर– धनंजय, कांची, दिनांक, व्यंजन कंपन आदि को पहले शिक्षक बोले फिर बच्चों से बुलवाकर उसके उच्चारण स्थान को

Downloaded From www.dietmathura.org

स्पष्ट करे कि इसमें मुख के साथ–साथ नाक से भी आवाज निकलती है। इसी तरह कोई शब्द बोलकर शिक्षक (जैसे–संस्कृत) बच्चों से पूछ सकता है कि इसकी ध्वनि कहाँ से उच्चरित हो रही है। इस तरह बच्चे बार–बार अभ्यास से इसका शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे और इसका दैनिक जीवन में भी प्रयोग कर सकेंगे। जैसे–रमेश संस्कृत पढ़ता है। रमेशः संस्कृतम् पठति। इस तरह बच्चे नये–नये शब्दों में इसका प्रयोग कर सकेंगे।

➢ शिक्षक पाठ में आये गद्यांश को पढ़कर शुद्ध उच्चारण के साथ बच्चों को भी पढ़ने को कहें। जैसे–आदि कवि वाल्मीकिना पितुः आज्ञापालनम्, भ्रातृस्नेहः, परोपकारः दया, दाक्षिण्यम् दीनरक्षा इत्यादीनि मानवतयाः पोपकानि जीवन मूल्यानि वर्णितानि सन्ति।

गतिविधि–1 शिक्षक बच्चों के तीन समूह बनाकर उनमें से एक समूह को अनुस्वार के शब्द बोलने को कहें। दूसरे समूह को हलन्त के शब्द जैसे–(छात्राणाम्) और तीसरे समूह को विसर्ग के शब्द बोलने को कहें, अध्यापकाः । इस प्रकार क्रम बदलकर अलग–अलग शब्दों को बोलने के लिए प्रेरित करें। जिससे बच्चों में नये–नये शब्दों को बोलने की दक्षता विकसित होगी।

2–शिक्षक इसके लिए कार्ड विधि का प्रयोग कर सकता है। तीन समूहों में बच्चों को बाँटकर अलग–अलग अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग के शब्द छाँटने को कह सकता है और साथ ही इसका शुद्ध उच्चारण करवाये। इस तरह समूह को बदलकर उनमें शुद्ध उच्चारण की क्षमता विकसित कर सकेगा।

3–कक्षा में बच्चों की संख्या के आधार पर तीन समूह बनाकर उनको अलग–अलग समूहवार अनुस्वार, विसर्ग और हलन्त के शब्द शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखने को कह सकता है तथा साथ ही उसका उच्चारण करा सकता है।

4–शिक्षक छात्रों से समूहवार तीनों का (अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग) अलग–अलग शब्दों में वाक्य प्रयोग बच्चों से करा सकता है तथा उसे सबके सामने प्रस्तुतीकरण करायें।

5–चार्ट के माध्यम से तीनों के अलग–अलग शब्द लिखवाकर व बोलवाकर उसे कक्षा में प्रस्तुत करा सकता है।

6–शिक्षक बच्चों से शब्द रूप, धातु रूप, पुलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग, कारक, विभक्ति शब्दों को वाक्य में प्रयोग कराकर उसे स्पष्ट करायें और बीच–बीच में बच्चों की कठिनाइयों को दूर करें।

शिक्षक निम्न पद्य का आदर्श सस्वर वाचन करे फिर बच्चों से उसका अनुकरण वाचन कराये। तत्पश्चात बच्चों से उसका सस्वर वाचन कराये–

करिष्यामि नो सऽ.गतिं दुर्जनानाम्
करिष्यामि सत्सऽ.गतिं सज्जनानाम्।
धरिष्यामि पादौ सदा सत्यमार्गे
चलिष्यामि नाहं कदाचित् कुमार्गे।।

इसमें शिक्षक कठिन शब्दों का उच्चारण करें और बच्चों से करायें–
जैसे–सत्सऽ.गतिं, धरिष्यामि, सत्यमार्गे, सज्जनानाम्।
इस पद्य के आधार पर शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछे कि–

- कस्य सऽ.गतिं न करिष्यामि ?
  उत्तरः दुर्जनानाम्।
- अहं सदा कुत्र पादौ धरिष्यामि ?
  उत्तरः सत्यमार्गे।

Downloaded From www.dietmathura.org

7– शिक्षक कक्षा में बच्चों के चार समूह बनाकर अलग–अलग एक–एक समूह को पद्य का अंश शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर वाचन कराये। इस प्रकार चारों लाइन का क्रमशः सस्वर वाचन कराया जाय। फिर जो समूह सबसे शुद्ध उच्चारण के साथ लय व गति के साथ वाचन किया उसके लिए विशेष ताली बजवायी जाय।

8–शिक्षक समूहवार बच्चों को कुछ शब्द देकर उसका वाक्य प्रयोग करा सकता है। जैसे–विद्यालयं, सत्य, भारतः, मम विद्यालयं नाम प्राथमिक विद्यालयः आशापुर अस्ति। सदा सत्यं वद। मम देशस्य नाम भारत अस्ति।

मूल्याकंन–निम्नलिखित को सुमेलित करें–

वर्ग क	**वर्ग ख**
प्रातः सूर्यः	जगतः तस्थुपश्च
रविवासरात्	उदेति
सूर्यः आत्मा	सप्ताहारम्भः भवति

2–प्रश्न पूछकर भी शुद्ध उच्चारण व लेखन कराया जा सकता है।

सः किं करोति ? सः पठति।

त्वं किं पठसि ? अहं पुस्तकं पठामि।

3–कठिन शब्द देकर उच्चारण कराइये–

भवितव्यम्	सम्पन्नाः	अभवन्
वस्तव्यम्	विवार्जिता	प्रत्यवदत्
गन्तव्यम्	मताः	आदिशत्
सुखं	सुखदः	चिन्तयेत्
दुखं	मानदण्डः	पूजयेत्
धनं	पर्वतः	धरित्रीम्
उत्तरस्यां	नदीः	अगणयत्
वत्सं	उद्योगः	अगच्छन्
उपदिष्टां	वदेयुः	तेषाम्
विपदां	त्रयोदशः	वदेयम्
दातारं	पाठः	आज्ञापालनम्
सत्यं	पितु	सऽ.गतिं

निम्न श्लोक का वाचन कराइए–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचामिन्द्रिय विग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

दूसरा समूह इसका अर्थ बताये।

तीसरा समूह अनुस्वार हलन्त और विसर्ग का चिहि्नत करे।

चौथा समूह शुद्ध – शुद्ध लिखे।

5–रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

प्रातः <u>प्रकाश</u> भवति।

<u>सः</u> जलने वृक्षान् सिंचति।

इदं क्रीडाक्षेत्राम् अस्ति।

6–सही/गलत में सही पर (✓) निशान लगाइए–

(अ) वयं हसामः।

(ब) मम विद्यालये सर्वे अध्यापकाः कर्त्तव्यपरायणाः सन्ति।

Downloaded From www.dietmathura.org

(स) व्यर्थं वद।

7— चित्र के माध्यम से उत्तर दीजिए—

- गणतंत्र दिवसस्य आरम्भः कदा अभवत् ? — गणतंत्र दिवसस्य का चित्र
- रक्षाबंधनं पर्व श्रावणमासस्य कस्यां तिथौ भवति। — रक्षाबंधन का चित्र
- संस्कृतस्य आदि कविः कः — वाल्मीकि का चित्र

8—पठित पाठ का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन कराएं व कठिन शब्दों को चिह्नित करने को कहें।

यात्रा वृत्तान्त—यात्रा का जीवन से अविच्छिन्न संबंध है। प्राकृतिक आदिम अत्यन्त घुमक्कड़ था। जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आदिकाल से मनुष्य रेगिस्तानों, पर्वतों, गुफाओं आदि की यात्रा करता आया है। बिना यात्रा किये उसका जीवन कठिन था। यात्रा ही उसके जीवनयापन का प्रमुख साधन भी था। मनुष्य की आज तक प्रगति उसकी यात्राओं द्वारा ही सम्भव हुई है। राहुल सांकृत्यायन ने अपनी रचना 'घुम्मकड़—शास्त्र' में घुम्क्कड़ी को संसार का सबसे बड़ा धर्म कहा है—''मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। ....मनुष्य स्थावर वृक्ष नहीं है, वह जंगम प्राणी है। चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने इसे छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है। ''वस्तुतः मनुष्य जाति का इतिहास उसकी ययावरी प्रवृत्ति से सम्बद्ध है। यह मानव की मूल प्रवृत्ति है।

यात्रा प्राचीन काल में धीरे—धीरे सौन्दर्य बोध के विकास के साथ सर्वत्र चारों दिशाओं में फैले हुए जगत का आकर्षण भी उसके लिए बढ़ता गया। देशों की विविधता, ऋतु परिवर्तन, प्राकृतिक—सुषमा और उसके विविध रूपों ने उसे अपनी ओर आकृष्ट किया। ''सौन्दर्य बोध की दृष्टि से तथा उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते हैं और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा—साहित्य/यात्रावृत्तान्त कहा जा सकता है।

यात्रा साहित्य की सार्थकता तभी है जब यात्रा में देखे गये स्थानों तथा भोगी गयी अनुभूतियों को अपनी कल्पना और भाव प्रवणता के सहारे कलात्मक ढ़ग से साहित्यिक अभिव्यक्ति दी जाय। डॉ0 नामवर सिंह के अनुसार तथ्यात्मक और जिन्दादिली यात्रा साहित्य की दो प्रमुख विशेषताएं हैं। वस्तुतः वर्णन कौशल से सृजीत दृश्य प्रत्यक्षीकरण की क्षमता, सहजता, आत्मीयता, क्रमबद्धता, रोचकता, कल्पना प्रवणता, तथ्यात्मकता और जिन्दादिली आदि यात्रा साहित्य के आवश्यक गुण माने जाते हैं।

हिन्दी साहित्य में यात्रा वृतान्त लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु से माना जा सकता है। भारतेन्दु ने 'सरयूपार की यात्रा ; 'मेंहदावल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', आदि शीर्षकों से इन वृतान्तों का बड़ा रोचक और सजीव वर्णन किया है। इसी प्रकार बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' में 'कतिकी नाहन' तथा 'गया यात्रा' का वर्णन किया है।

द्विवेदी युग के बाद यात्रा वृतान्त के लेखन में तेजी से विकास हुआ। अब यात्रा विवरण की सीमा को लांघकर रचनात्मक अनुभव को विशिष्ट शैली और भाषिक सौन्दर्य से युक्त होकर लिखे जाने लगे। ऐसे यात्रा वृतान्त लेखकों में अज्ञेय, निर्मल वर्मा, यशपाल, मंगलेश डबराल आदि का उल्लेखनीय स्थान है।

इस प्रकार हिन्दी में यात्रावृतान्तों की एक समृद्ध परम्परा बन गई जिसमें नए—पुराने सभी लेखकों ने अपना योगदान किया है। ये सभी यात्रा वृतान्त प्रयोजन, विषय, शैली की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण है। यात्रा साहित्य की दुनिया में सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम है महापण्डित की उपाधि से प्रसिद्ध राहुल सांकृतयायन का। इन्होंने देश, विदेश की सीमा पार कर अनेक महत्वपूर्ण साहित्य रचना द्वारा यात्रा—वृतान्त विधा को महिमा मण्डित किया।

Downloaded From www.dietmathura.org

शिक्षण प्रक्रिया (सामान्य उद्देश्य)–

- विद्यार्थियों में यात्रा के प्रति रुचि पैदा करना।
- खोजी प्रवृत्ति का विकास करना।
- धैर्य, साहस आदि गुणों का विकास।
- देश विदेश के प्रसिद्ध यात्रियों के ऐतिहासिक महत्व से परिचित करना।
- पाठ के माध्यम से यात्रा के विविध प्रसंगों का परिचय।
- यात्रा वृतान्त की विधागत शैली और विशेषताओं से सामान्य परिचय।

विशिष्ट उद्देश्य– यात्रा वृतान्त में वर्णित प्रसंगों, घटनाओं, परिस्थितियों के आधार पर उपयुक्त सामान्य उद्देश्यों में उल्लिखित बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में उद्देश्य का निर्धारण।

प्रस्तुतीकरण–यात्रा संबंधी किसी रोचक प्रसंग को, यात्रा में वर्णित किसी घटना को अथवा लेखक के जीवन परिचय और यात्रा के प्रति उसकी रुचि से संबंधित वर्णन को आधार बनाया जा सकता है।

मौन पठन–निर्धारित अंश (अन्विति) का विद्यार्थियों द्वारा पठन। इसके लिए समय निर्धारित कर देना चाहिए। इससे पठन गति में वृद्धि होती है।

वियषवस्तु विश्लेषण तथा भाषा कार्य–इसके लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की जा सकती है–

- यात्रा का कारण, प्रयोजन, यात्री का कुतहल, उल्लास, उमंग।
- मार्ग में आने वाले दृश्य, भौगोलिक और प्राकृतिक स्थिति और घटनाएं आदि।
- मार्ग में उपस्थित बाधाएं, समस्याएं, कठिनायां आदि।
- यात्रा में विभिन्न स्थानों के निवासियों के सामाजिक, आर्थिक स्थिति, स्वभाव, शिष्टाचार आदि।
- पाठ में आए हुए ऐतिहासिक अथवा अन्य संदर्भ।
- कठिन तथा मर्मस्पर्शी स्थलों की व्याख्या।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ—2

उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित कविता, निबन्ध, कहानी, एकांकी, यात्रावृत्तान्त, जीवनी, आत्मकथा, पत्रलेखन के लेखकों का सामान्य परिचय, उनका अध्ययन एवं अध्यापन कार्य

उद्देश्य—

- उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित विभिन्न विधाओं की रचनाओं से अवगत कराना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं का सामान्य परिचय प्राप्त करना।
- विभिन्न विधाओं के सामान्य क्रमिक विकास से परिचित होना।
- विभिन्न विधाओं की शिक्षण विधियों और सोपानों से परिचित होना।
- गद्य और पद्य विधा की सूक्ष्म बारिकीयों से अवगत होना।
- गद्य विधा के अन्तर्गत आए निबन्ध कहानी आदि की शिक्षण प्रक्रिया में स्थित सूक्ष्म अन्तर का ज्ञान प्राप्त करना।
- विभिन्न विधाओं के शिक्षण उद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना।

क्र0 सं0	साहित्यिक विधा	कक्षा—6	कक्षा—7	कक्षा—8
1	कविता	1—चिर महान (पन्त) 2—नीति के दोहे और भक्ति के पद (मीरा) 3—माँ कह एक कहानी (मैंथिलीशरण गुप्त) 4—समर्पण (राम अवतार त्यागी) 5—खग उड़ते रहना (ओ, नीरज) 6—बादल चले गये वे (त्रिलोचन) 7—प्राणी वही प्राणी है (भवानी प्रसाद मिश्र)	1—जागो जीवन के प्रभात (जयशंकर प्रसाद) 2—भिक्षुक (सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला') 3—निज भाषा उन्नति (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) 4—बाललीला और भक्ति के पद (सूरदास, रसखान) 5—मेघ बजे, फूले कदम्ब (नागार्जुन) 6—कलम आज उनकी जय बोल (रामधारी सिंह दिनकर) 7—मनभावन सावन (सुमित्रानन्दन पंत) 8—वरदान माँगूँगा नहीं (शिवमंगल सिंह 'सुमन')	1—वीणा वादिनि वर दे (निराला) 2—बिटिया के लिए (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना) 3—नीति और भक्ति के पद (बिहारी) 4—धानों के गीत (केदारनाथ सिंह) 5—बाल छवि, विनय के पद, सीता स्वयंवर (तुलसीदास) 6—पहरूवे सावधान रहना (गिरीजाकुमार माथुर) 7—चुप—चाप (सच्चिदानन्द हीनानन्द वात्स्यायन अज्ञेय) 8—नीड़ का निर्माण फिर—फिर (हरवंशराय बच्चन)
2	निबन्ध	1—आप भले तो जग भला (श्री मन्नारायण) 2—लोकगीत (डॉ0 भगवत शरण उपाध्याय)	1—सत्साहस (गणेश शंकर विद्यार्थी) 2—क्या निराश हुआ आये (हजारी प्रसाद द्विवेदी)	1—सच्ची वीरता (सरदार पूर्ण सिंह) 2—आत्मनिर्भरता (रामचन्द्र शुक्ल) 3—लीक वही नहीं (वियोगी हरि)

Downloaded From www.dietmathura.org

3	**कहानी**	1–छोटा जादूगर (जयशंकर प्रसाद) 2–क्यों क्यों लड़की (महाश्वेता देवी) 3–हार की जीत (सुदर्शन) 4–ईदगाह (प्रेमचन्द) 5–साप्ताहिक धमाका (डॉ0 हरिकृष्ण देवसरे) 6–छिपा रहस्य (क्वेंटीन रेनाल्ड)	1–राजधर्म (जातक कथा से) 2–शापमुक्ति (रमेश उपाध्याय) 3–भविष्य का भय (आशापूर्णा देवी)	1–काकी (सीयारामशरण गुप्त) 2–अपराजिता (शिवानी) 3–दुःख का अधिकार (यशपाल)
4	**एकांकी**	बहादुर बेटा (विष्णु प्रभाकर)	कर्तव्य पालन (रामनरेश त्रिपाठी)	जूलिया (अन्तोनचेखोव)
5	**यात्रावृत्तान्त**	हिन्द महासागर में छोटा सा हिन्दूस्तान (रामधारी सिंह दिनकर)	मेरी यूरोप यात्रा (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद)	अमरकंटक से डिंडौरी (अमृतलाल बेगड़)
6	**आत्मकथा**	–	मैं कवि कैसे बना (गोपाल प्रसाद व्यास)	मेरी माँ (रामप्रसाद बिस्मिल)
7	**पत्र**	अमर शहीद भगत सिंह के पत्र (भगत सिंह)	–	एक स्त्री का पत्र (रवीन्द्रनाथ)

कविता–कविता मानवीय भावों की सहज अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में मानव मन की अन्तर्निहित पीड़ाओं, आकांक्षाओं तथा मनोभावों का छन्दोबद्ध एवं अलंकारिक प्रकटीकरण ही कविता है। अनादिकाल से कवि कविता के माध्यम से युग जीवन को अभिव्यक्त करता आया है। इसमें सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की ऐसी अलौकिक रसधार प्रवाहित होती है जो अपने सम्पर्क में आए हुए को एक समान आनन्दित करती चलती है। यह न केवल युग सत्य को प्रतिभाषित करती वरन समाज को एक नई दिशा और एक नई चेतना भी प्रदान करती है। मानवीय गुणों का परिष्कार भी करती है। कबीर, सूर, तुलसी, रहीम, प्रसाद, पन्त, दिनकर जैसे महान कवियों की रचनाएँ इस कथन की सत्यता को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त है।

कविता में रस, छन्द और अलंकार भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है इसमें जहाँ तक रस की बात कही जाय तो–साहित्य के आचार्यों ने रसात्मक वाक्य को ही काव्य कहा है। 'काव्य प्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट के अनुसार विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव द्वारा व्यक्त स्थायी भाव रस कहलाता है। (भाव ही रस का आधार है। मन के विकार भाव कहलाते हैं। भाव का आश्रय हृदय होता है। ये स्थायी भाव के रूप में वासना के रूप में मानव हृदय में सदा विद्यमान रहते हैं।) प्रत्येक स्थायी भाव का एक निर्धारित रस है। जिसे इस प्रकार देखा जा सकता है–

स्थायी भाव	**रस**
1. रति	1. श्रृंगार
2. हास	2. हास्य
3. शोक	3. करूणा
4. उत्साह	4. वीर
5. क्रोध	5. रौद्र

Downloaded From www.dietmathura.org

6. भय	6. भयानक
7. जुगुप्सा	7. वीभत्स
8. आश्चर्य (विस्मय)	8. अद्भुत
9. निर्वेद	9. शान्त

वस्तुतः कविता और रस दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। बिना रस के कविता नहीं, बिना कविता के रस नहीं। काव्य का रस काव्यानन्द कहलाता है।

छन्द कविता में सक्रियता और प्रभावशीलता लाता है। हमारी अनुभूतियों को लययुक्त, संगीतात्मक, सुव्यवस्थित और नियोजित करता है। छन्द कविता को स्तरणीय बना देता है। इसके तीन प्रमुख तत्व होते हैं।

1. मात्राओं और वर्णों की किसी विशेष क्रम से योजना।
2. गति और यति के विशेष नियमों का पालन।
3. पाद या चरण।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार कहते हैं। इसके प्रयोग शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है। अतः अलंकार को काव्य का आवश्यक अंग माना गया है, लेकिन यहाँ यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि वे आवश्यक तत्व के रूप में ही है, अनिवार्य तत्व के रूप में नहीं। अभिप्राय यह है कि काव्य के काव्यत्व अलंकारों के अभाव में भी हो सकता है। वे काव्य के साधन हैं साध्य नहीं। आचार्य मम्मट ने भी अपनी काव्य की परिभाषा में अलंकारों की स्थिति अनिवार्य नहीं मानी है। उन्होंने 'पुनःस्वापि' कहकर अलंकारों से रहित काव्य में भी काव्यत्व माना है।

हिन्दी काव्य–साहित्य का इतिहास–

हिन्दी काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों को जनने और समझने के लिए हमें उसके आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। हिन्दी साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने मुख्यतः चार भागों में बाँटा है। यह विभाजन युग विशेष की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया है, जो इस प्रकार है–

(1) आदिकाल (वीरगाथा काल)	–	संवत् 1050 – 1375
(2) भक्तिकाल	–	संवत् 1375 – 1700
(3) रीतिकाल	–	संवत् 1700 – 1900
(4) आधुनिक काल	–	संवत् 1900 से अब तक

(1) आदिकाल (वीरगाथा काल)–काल विभाजन के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को आदि काल या वीरगाथा काल कहा जाता है। इस काल की कविता का मुख्य विषय वीर पुरुषों का योगदान और वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ही मिलता हैः इसे लक्ष्य यकर इस युग का नाम 'वीरगाथा' काल दिया गया। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं–

1. आश्रयदाताओं की प्रशंसा।
2. राष्ट्रीयता की भावना का अभाव।
3. युद्धों का सजीव वर्णन।
4. वीर रस एवं श्रृंगार रस की प्रधानता।
5. ऐतिहासिक वृत्तों मे कल्पना की प्रबलता।

Downloaded From www.dietmathura.org

6. छन्दों की विविधता।
7. काव्य में अपभ्रंश, डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग।

(2) भक्तिकाल—भक्ति काल की प्रधानता के कारण विद्वानों ने 14वीं शताब्दी से 17वीं शताब्दी तक के काल को भक्तिकाल कहकर सम्बोधित किया। इस समय की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—

1. ईश्वर में सहज विश्वास।
2. नाम स्मरण की महत्ता।
3. ज्ञान की महत्ता।
4. गुरु महिमा।
5. अहंकार का परित्याग।
6. जाति—पाति का विरोध।
7. लोकमंगल की भावना।
8. समन्वय की भावना।
9. सत्संग का महत्व।
10. आडम्बर का खण्डन।

(3) रीतिकाल—हिन्दी साहित्य के विद्वान इतिहास लेखक 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के बीच के साहित्य को रीतिकाल कहकर पुकारते हैं। काल विभाजन में यह नाम विवादास्पद ही रहा है और इस विवाद के बीच 'रीतिकाल' तथा 'श्रृंगारकाल' में दो नाम सामने आये। इस काल के कवियों को रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त वर्ग के अन्तर्गत बाँटा गया है। इस काल की कुछ प्रमुख विशेषताएँ/प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं—

1. रीतिग्रन्थों का निर्माण।
2. श्रृंगार रस की प्रमुखता।
3. प्रकृति चित्रण।
4. अलंकरण का प्राधान्य।
5. मुक्तक शैली की प्रधानता।
6. व्रजभाषा की प्रधानता।
7. चमत्कार दर्शन, आदि।

(4) आधुनिक काल—हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता में क्रमशः विभाजित किया गया है। प्रत्येक युग की अपनी कुछ खास प्रवृत्तियाँ हैं जो दूसरे युग से उसे पृथक करती हैं। जैसे—भारतेन्दु युग में जहाँ कविता में राष्ट्रीयता की भावना की प्रबलता थी तो द्विवेदी युग में इसके साथ ही खड़ी बोली में प्रयोग किये गये। छायावाद में सूक्ष्म कल्पना एवं प्रकृति चित्रण की प्रधानता रही तो प्रगतिवाद में सामाजिक यथार्थता पर बल दिया गया। प्रयोगवाद में जहाँ प्रयोग के लिए प्रयोग किये गये वही नई कविता में मानव मन की निराशा तथा अन्य विषयों का बैविध्य मिलता है।

कविता शिक्षण के उद्देश्य—डॉ0 रामशकल पाण्डेय के अनुसार कविता शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्यों पर ध्यान देना अध्यापक के लिए आवश्यक है—

1. लय, ताल एवं भाव के अनुसार कविता पाठ करना।

Downloaded From **www.dietmathura.org**

2. कविता में रूचि उत्पन कर काव्य रचना के लिए प्रोत्साहित करना।
3. सहानुभूति क्षेत्र के विस्तार तथा उदात्त भावों के उत्पादन एवं संवर्द्धन द्वारा उन्हें सन्तुलित एवं लोक कल्याणकारी चरित्र के निर्माण की प्रेरणा देना।
4. कवि के भावों एवं विचारों के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित कराके अलोकिक आनन्द की अनुभूति कराना।
5. कवि के भावों, कल्पनाओं तथा अभिव्यक्तियों के सौन्दर्य की परख की योग्यता उत्पन्न करना।
6. भाव–भंगिमाओं तथा स्वर के उतार चढ़ाव के साथ कविता–पाठ का अभ्यास कराना।
7. विविध कविता शैलियों का परिचय कराके उन्हें अपने योग्य शैलनी के विकास में सहायता देना।
8. साहित्य के साथ परिचय कराते हुए उसमें बालकों की ऐसी स्थायी रूचि का विकास करना जिससे उनमें स्वाध्यायशीलता उत्पन्न हो।

कविता शिक्षण की विधियाँ–डॉ0 पाण्डेय ने कविता शिक्षण के उद्‌देश्यों पर विस्तृत विवेचन करने के उपरान्त कविता शिक्षण की निम्नलिखित विधियाँ बतायी हैं–

1. गीत तथा अभिनय प्रणाली।
2. अर्थ–बोध–प्रणाली।
3. व्याख्या–प्रणाली।
4. खण्डान्वय–प्रणाली।
5. व्यास–प्रणाली।
6. तुलना–प्रणाली।
7. समीक्षा–प्रणाली।

1–गीत तथा अभिनय प्रणाली–यह प्रणाली प्रारम्भिक कक्षाओं में बाल गीतों के लिए प्रयोग में लाई जाती है। कुछ गीतों के अर्थ का कोई महत्व नहीं होता है। केवल बालकों को सस्वर बनाना, ताल में लाना और संगीत से परिचय कराना ही इनका उद्‌देश्य है।

2–अर्थ–बोध–प्रणाली–इस प्रणाली में शिक्षक स्वयं कविता का अर्थ बताता चलता है। बालक की रूचि तथा रसानुभूति का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। अतः यह प्रणाली दूषित और त्याज्य है।

3–व्याख्या–प्रणाली–इस प्रणाली में अध्यापक एक–एक पद लेकर उसका अर्थ करता हुआ कवि का दार्शनिक मत, प्रवृत्ति, उसकी रचना–शैली, परिस्थिति, कविता की भाषा, अलंकार भाव, रस आदि की व्याख्या करके पद का अर्थ स्पष्ट करता चलता है। यदि उसमें कोई अन्तर्कथा होती है तो उसका भी ज्ञान करा देता है। इस प्रणाली का प्रयोग केवल माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में ही होना चाहिए।

4–खण्डान्वय–प्रणाली–इसका प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहते हैं। यह प्रणाली उन पदों में पढ़ाने के काम आती है, जिनमें विशेषणों की भरमार हो, भावों की भीड़ हो, घटनाओं की घटा हो और एक–एक बात का अर्थ स्पष्ट किये बिना स्पष्टता न आती हो। इस प्रणाली का प्रयोग केवल वर्णनात्मक तथा ऐतिहासिक पद्यों के पढ़ाने में ही किया जाता है।

5–व्यास प्रणाली–यह मुख्यतः उच्च श्रेणी की भाव–प्रधान कविताओं के पढ़ाने के लिए प्रयोग की जाती है। इस प्रणाली में पद को भाषा और भाव, दोनों की दृष्टि में परखा जाता है। भाव के स्पष्टीकरण के लिए अनेक उदाहरणों, दृष्टान्तों, सूक्तियों तथा कथाओं का प्रयोग कर अध्यापक व्याख्या करता है। भाषा की दृष्टि से विचार करते समय अध्यापक एक–एक शब्द, उसकी उपादेयता, शब्द–बल, दोष तथा

Downloaded From www.dietmathura.org

वाक्य–विन्यास का स्पष्टीकरण करता चलता है। अतः इस प्रणाली में अध्यापक को विषय का गहन ज्ञान अपेक्षित है। बालकों की रूचि, उत्साह तथा उल्लास को बनाये रखने के लिए अध्यापक को कुशल अभिनेता भी होना चाहिए। भावात्मक कविताओं में इसी प्रणाली का प्रयोग उत्तम माना जाता है।

6–तुलनात्मक प्रणाली–इस प्रणाली में सम–भाषा कवि, भिन्न–भाषा कवि की तुलना तथा भाव–तुलना द्वारा साम्य और असाम्य–दोनों का विवेचन किया जाता है। साथ ही एक ही कवि अपने अनाये हुए विभिन्न काव्यों में एक ही बात कई भावों या उद्‌देश्यों से कहता है। ऐसे भावों या वर्णनों को तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में विवेचन तथा तर्क–शक्ति का विकास होता है, ज्ञान का विस्तार होता है। कवि के उद्‌देश्यों, कविता के विभिन्न स्वरूपों तथा कवि–शैली का भी परिज्ञान हो जाता है।

7–समीक्षा प्रणाली–इस प्रणाली द्वारा अध्यापक 'प्रश्नोत्तर विधि' का आश्रय लेकर कवि की समीक्षा करता है तथा विद्यार्थियों को आलोचना के सिद्धान्त बताकर सहायक पुस्तकों की सहायता से समष्टि रूप से एक कवि की रचनाओं अथवा कविताओं की समीक्षा करने को कहता है। अतः यह प्रणाली उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी हो सकती है।

कविता शिक्षण की इन विविध प्रणाली में से कौन सी प्रणाली सर्वाधिक उपयुक्त और सफल होगी यह अध्यापक की योग्यता और क्षमता पर निर्भर करता है। कविता के विषय, कक्षा का स्तर और बच्चों की समझ को ध्यान में रखकर ही उसे कविता शिक्षण की प्रणाली का प्रयोग करना चाहिए। प्रणाली चयन के बाद पाठ प्रस्तुतीकरण को किस विधि से चरण दर चरण प्रस्तुत करना चाहिए इसकी बात आती है, क्योंकि कविता पाठ को विभिन्न सोपानों में पढ़ाने में जहाँ कक्षा में रोचकता और जिज्ञासा बनी रहती है वहीं समझने और समझााने में सरलता और सहजता रहती है। विद्वानों द्वारा कविता शिक्षण के सोपान इस प्रकार बताये गये हैं–

1–उद्‌देश्य–

(अ) प्रस्तुत कविता के भाव एवं विचार ग्रहण सम्बन्धी उद्‌देश्य।
(ब) भाषा और शैली सम्बन्धी उद्‌देश्य।
(स) सराहना सम्बन्धी उद्‌देश्य।
(द) अभिवृत्यात्मक उद्‌देश्य।

2–पूर्वज्ञान–प्रसंगानुकूल बालकों के ज्ञात भावों एवं तथ्यों का उल्लेख।

3–प्रस्तावना–प्रस्तावना के अनेक रूप हो सकते हैं, जैसे–कविता की पृष्ठभूमि अथवा प्रसंग प्रस्तुत करना, कवि के परिचय द्वारा उचित प्रश्नों द्वारा कविता की प्रमुख बातों से शिक्षार्थियों को परिचित कराना आदि।

4–आदर्श पाठ–इसके उपरान्त शिक्षक को लय सहित (राग सहित नहीं) छन्दों के अनुसार स्वर के आरोह–अवरोह साथ भावयुक्त आदर्श वाचन करना चाहिए। भाव–भंगिमा इतनी स्वाभावित और सजीव हो कि कविता पाठ के समय ही प्रशिक्षणार्थी/विद्यार्थी कविता के भाव में डूबने लग जाए।

5–अनुकरण वाचन–इसके उपरान्त विद्यार्थियों से अनुकरण पाठ करवाना चाहिए, जिससे उन्हें छन्छ, भावों के अनुसार उचित आरोह–अवरोह और भाव–भंगिमाओं के साथ शुद्ध पाठ का अभ्यास हो सके। यहाँ पर उनके वाचन सम्बन्धी दोष भी दूर कर दिये जाने चाहिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

6–काठिन्य निवारण–कविता में कुछ शब्द या स्थल ऐसे हो सकते हैं, जो विद्यार्थियों की समझ से बाहर हों। ऐसे में उनकी कठिनाइयों को अर्थ कथन, विलोम, यथार्थ, सन्धि, उदाहरण, अभिनय आदि द्वारा दूर कर देना चाहिए। युक्तियाँ विषय के अनुसार हों।

7–केन्द्रिय भाव ग्रहण–कविता के मुख्य भाव, विषय अथवा प्रसंग को शिक्षार्थियों ने कहाँ तक ग्रहण किया है, इसकी जाँच के लिए कुछ प्रश्न पूछे जायेंगे। यदि शिक्षार्थी केन्द्रिय भाव बताने में असमर्थ दीख पड़ते हैं तो विषय की स्पष्टता के लिए शिक्षक द्वितीय आदर्श पाठ प्रस्तुत कर सकता है।

8–व्याख्या एवं सौन्दर्यानुभूति।

9–सस्वर पाठ–विद्यार्थियों द्वारा सस्वर पाठ किया जायेगा।

10–मूल्यांकन।

www.dietmathura.org

Downloaded From **www.dietmathura.org**

पाठ–3
दिये गये अनुच्छेदों के शीर्षक लिखना

उद्देश्य–

- अनुच्छेद का अर्थ है पैराग्राफ। बच्चों में इसकी समझ विकसित करना।
- किसी विषय पर अनुच्छेद या संक्षेप में अपने विचार रखना।
- सफल अनुच्छेद लेखन ही निबंध लिखने की पहली सीढ़ी है, परिचय कराना।
- अनुच्छेद लेखन में सम्पूर्ण ज्ञान की अपेक्षा नहीं वरन् अनुभूति प्रधान लेखन की अपेक्षा करना।
- अनुच्छेद का उचित शीर्षक क्या होगा इसका अभ्यास कराना।

गतिविधि 01 (बड़े समूह में)–

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाये तो हिल जाये परन्तु वीर के दिल में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो मगर वीरों की नीति, बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है।

प्रश्न–उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर–वीर पुरुष की ताकत। (सरदार पूर्ण सिंह पृ0 15)

प्रश्न–वीर पुरुष की ताकत को अचल क्यों कहा गया है ?

उत्तर–कुदरत के दैवी केन्द्र होने की वजह से वीर पुरुष की ताकत अचल है।

(प्रशिक्षु के लिए)–पाठ्यपुस्तक से और भी अनुच्छेद लिया जा सकात है और अपठित भी अर्थात् पाठ्यपुस्तक से अलग अपठित अनुच्छेद भी। हम किसी चित्र अथवा शीर्षके के आधार पर बच्चों से अनुच्छेद का लेखन अभ्यास करा सकते हैं। स्वयं सोचकर लिखने से बच्चों की लेखन संबंधी अशुद्धियाँ सामने आती हैं और उनका सुधार होता है। अनुच्छेद लेखन के अभ्यास से बच्चों की बौद्धिक क्षमता का विस्तार होता है। पढ़कर समझने के कौशल का भी विकास होता है। इसके लिए हमें कुछ उपयुक्त शीर्षक देकर उनसे लेखन कार्य (अनुच्छेद) कराना होगा–यथा–

- मेरा परिवार।
- मेरा पास–पड़ोस का परिवेश।
- मेरा बढ़ई, धोबी, नाऊ।
- मेरे खेल।
- मेरा विद्यालय।
- मेरे शिक्षक।
- मेरा मित्र।

निम्नांकित शीर्षकों को देकर हमें उनपर दस वाक्य या अनुच्छेद तैयार कराना होगा। जिससे उनके लेखन का अभ्यास होगा तथा उनका बौद्धिक विकास होगा। अगर हम अपनी निर्धारित पाठ्यपुस्तक से संबंधित गद्यांश या पद्यांश का अनुच्छेद देते हैं तो इसके लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

1. उत्तर लिखने से पूर्व अनुच्छेद को दो–तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

2. मुख्य आशय को समझने का प्रयास करना चाहिए।
3. प्रश्नों को पढ़कर गद्यांश से इसका उत्तर ढूँढ़ना चाहिए।
4. प्रश्नों के उत्तर अपनी शब्दावली में दिए जाने चाहिए।
5. यदि शीर्षक पूछा जाय तो गद्यांश पर आधारित शीर्षक देना चाहिए। कभी–कभी गद्यांश में भी शीर्षक संबंधी शब्दावली मिल जाती है।

मूल्यांकन–

- अनुच्छेद को बार–बार क्यों पढ़ना चाहिए ?
- प्रश्नों के उत्तर कहाँ से ढूँढ़ना चाहिए ?
- शीर्षक लिखने का आधार क्या होना चाहिए ?

गतिविधि–2 'मेरा पेन'

प्रत्येक बच्चे से अनुच्छेद लेखन कराया जाय–

....

....

गतिविधि–3

विद्यार्थी जीवन हँसने–हँसाने का समय है। खेल–खेल में पढ़ाई का अभ्यास इसी उम्र में होता है। माता–पिता लाड़–प्यार करते हैं। परिवार वाले स्नेह की वर्षा से अबोध मन को गुदगुदाते हैं। नित्य नये मित्र बनते हैं, छेड़–छाड़ चलती है, नोंक–झोंक भी होती है। कभी–कभी लड़ने–झगड़ने, मारपीट या मनमुटाव का अवसर भी आ जाता है, परन्तु सारा द्वेष, समस्त क्रोध, सारी कड़वाहट दूसरे पल ही नष्ट हो जाती है। आज जिससे लड़े, कल उसी के साथ बैठ मीठी–मीठी बातें करने का दृश्य दिखायी देता है, खाने–पीने और मौज उड़ाने का यह मस्ताना मौसम चाहे कितना छोटा क्यों न हो, लुभावना और सुहावना होता है।

प्रश्न–

- विद्यार्थी जीवन किस बात का समय है ?
- विद्यार्थी जीवन में आपस का लड़ाई–झगड़ा जल्दी क्यों समाप्त हो जाता है ?
- इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए ?
- अर्थ स्पष्ट कीजिए–अबोध, मनमुटाव।

मूल्यांकन–

- बच्चों को अनुच्छेद लेखन क्यों करवाना चाहिए ?
- अनुच्छेद लेखन से किन–किन बातों का विकास होता है ?

अभ्यास कार्य–

निम्नलिखित विषयों में से किसी पाँच पर 50 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए–

- मैं बस स्टाप पर खड़ा था कि अचानक.. ।
- मैं चौपाल में खड़ा नीम का पेड़ हूँ।
- बसन्त ऋतु में गाँव की भोर।
- दीपावली पर प्रकाश का दृश्य.. ।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

- जेठ की दोपहरी
- हम पिकनिक पर जा रहे थे कि...।
- बरसों बाद मेरा मित्र आ मिला तो..।

अन्त में उपर्युक्त सभी विषयों पर बच्चों से लेखन कार्य कराया जाय। उन्हें बताया जाय कि अभ्यास प्रश्न के लेखन एवं स्वतंत्र लेखन में अन्तर है–

- स्वतंत्र लेखन में बच्चों की स्मृति में बसे विचार, अवलोकन, अनुभव और किसी घटना–प्रसंग के अवसर पर अचानक हुई प्रतिक्रिया को शामिल करने की छूट होती है।
- यह आजादी बच्चों को ज्यादा से ज्यादा दी जानी चाहिए।
- तभी उनका मौलिक लेखन उभरकर सामने आएगा।
- बच्चों को यह अहसास होने लगेगा कि कौन सी बातें महत्त्वपूर्ण हैं।
- अनुच्छेद लेखन निबंध लेखन की पहली सीढ़ी है, क्योंकि निबंध लेखन में कई अनुच्छेद होते हैं।

मूल्यांकन–अनुच्छेद लेखन को निबंध लेखन की पहली सीढ़ी क्यों कहा जाता है ? अनुच्छेद लेखन की कुछ गतिविधियाँ–

- बच्चों से उनके जीवन के बारे में लिखने को कहें।
- प्रत्येक वाक्य में एक गणितीय आँकड़ा आए–जैसे–''मैं अपने माता–पिता की पहली सन्तान हूँ। मेरा जन्म 14 फरवरी सन् 1997 को हुआ...............................।''
- प्रत्येक वाक्य में एक घटना या उपलब्धि आए। जैसे–मैं 8 वर्ष की उम्र में ही साइकिल चलाना सीख गया............................ ।
- किसी वस्तु के बारे में उसका नाम लिए बिना ही वर्णन कराना। वर्णन इस तरह हो कि पढ़ने वाला वस्तु के बारे में जान जाय। यथा–

  उन्होंने पशुबल के समक्ष आत्मबल का शास्त्र निकाला, तोपों और मशीनगनों का सामना करने के लिए अहिंसा का आश्रय लिया। किंतु सोचने की बात यह है कि अहिंसा का आश्रय उन्होंने लिया क्यों, क्या इसलिए कि अंग्रेजों के विरूद्ध हिंसा का आश्रय लेकर वे भारत को स्वाधीन नहीं कर सकते थे, अथवा इसलिए कि मानव समाज को वे शिक्षा देना चाहते थे कि मनुष्य जब तक पाशविक साधनों का प्रयोग करने को बाध्य है, तब तक वह पूरा मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।
- इस अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
- आप कुछ और सोचों..

लेखन परखते समय कुछ आवश्यक बातें–

- अनुच्छेद परखते समय हमारी नजर उभारे गए बिन्दुओं, उनकी विविधता और जिस संवेदना के साथ बच्चों ने व्यक्त किया है उस पर जानी चाहिए।
- स्वतंत्र भाव प्रकाशन में यह सतर्कता बहुत उपयोगी है।
- एक निर्धारित कापी पर विचारों को दर्ज करना, रंग–बिरंगे चित्र चिपकाना, शीर्षक लिखना या रेखांकन करने की भरपूर स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–4
पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़कर समझना

उद्देश्य–

- पाठ्यपुस्तक से इतर अन्य पाठ्यसामग्री को पढ़ने के प्रति रूचि जागृत करना।
- पढ़ी गयी सामग्री के कथ्य, महत्त्वपूर्ण विचार आदि को समझ पाने की दक्षता विकसित करना।
- सफल अनुच्छेद लेखन ही निबंध लिखने की पहली सीढ़ी है, परिचय कराना।
- तर्क, चिंतन, कल्पनाशक्ति का विकास करना।

मूल्यांकन–

हिन्दी भाषा के तृतीय सेमेस्टर में यह पाठ आ चुका है। अतः पूर्वोक्त ढंग से ही इस पर काम किया जाना चाहिए। यहाँ ध्यातब्य है कि इस पाठ की पाठ्यवस्तु संस्कृत भाषा की होनी चाहिए।

संस्कृत की पाठ्यवस्तु–

'पढ़ना' दक्षता को पुष्ट करने के लिए जरूरी है कि बच्चों को पाठ्यवस्तु अधिक से अधिक उपलब्ध करायी जाय। यह पाठ्यवस्तु बच्चों की रूचि, उनके स्तर के अनुसार हो, तो बच्चा पढ़ने के लिए प्रेरित होता है। जब बात संस्कृत की हो तो यह बात अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि बोलचाल की भाषा न होने के कारण इससे बच्चा अपरिचित ही होता है।

संस्कृत भाषा में लिखी/छपी हुई सामग्री बच्चों को पढ़ने के लिए दी जाय। कुछ संस्कृत प्रचारक संस्थानों, प्रकाशकों द्वारा बच्चों के लिए गीत, कहानियाँ आदि प्रकाशित किये जाते हैं। उन्हें लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य राज्यों/केन्द्र की संस्कृत पाठ्यपुस्तकों के रोचक पाठों का उपयोग किया जा सकता है। संस्कृत साहित्य में उपलब्ध हितोपदेश, पंचतंत्र, कथा सरितसागर जैसे साहित्य से कहानियाँ लेकर आकर्षक तरीके से लिखकर उसपर संबंधित चित्र बनवाकर पढ़ने हेतु दिया जा सकता है।

संस्कृत पाठ्यवस्तु को पढ़कर समझने में शिक्षक को यथावश्यक मदद करनी होगी।

क्र0 सं0	साहित्यिक विधा	कक्षा–6	कक्षा–7	कक्षा–8
1	कविता	1–चिर महान (पन्त), 2–नीति के दोहे और भक्ति के पद (क,र,मीरा) 3–माँ कह एक कहानी (मैथिलीशरण गुप्त) 4–समर्पण (रामअवतार त्यागी) 5–खग उड़ते रहना (गो0नीरज) 6–बादल चले गये वे (त्रिलोचन) 7–प्राणी वही प्राणी हैं (भवानी प्रसाद मिश्र)	1–जागो जीवन के प्रभात (जयशंकर प्रसाद) 2–भिक्षुक (सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला') 3–निजभाषा उन्नति (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) 4–बाललीला और भक्तिपद (सूरदास, रसखान) 5–मेघ बजे फूले कदम्ब (नागार्जुन) 6–कलम आज उनकी जय बोल (रामधारी सिंह दिनकर) 7–मनभावन सावन	1–वीणा वादिनी वर दे (निराला) 2–बिटिया के लिए (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना) 3–नीति और भक्ति के दोहे (बिहारी) 4–धानों के गीत (केदारनाथ सिंह) 5–बाल छवि, विनय के पद, सीता स्वयंवर (तुलसीदास) 6–पहरूए सावधान रहना (गिरिजाकुमार माथुर) 7–चुप–चाप

Downloaded From www.dietmathura.org

			(सुमित्रानन्दन पंत) 8—वरदान मागूँगा नहीं (शिवमंगल सिंह 'सुमन')	(स0हीरानन्दनवा0अज्ञेय) 8—नीड़ का निर्माण फिर—फिर (हरिवंशराय बच्चन)
2	निबन्ध	1—आप भले तो जग भला (श्रीमन्नारायण) 2—लोकगीत (डॉ0 भगवतशरण उपाध्याय)	1—सत्साहस (गणेश शंकर विद्यार्थी) 2—क्या निराश हुआ जाय (हजारी प्रसाद द्विवेदी)	1—सच्ची वीरता (सरदार पूर्ण सिंह) 2—आत्मनिर्भरता(रामचन्द्र शुक्ल) 3—लीक वही नहीं (वियोगी हरि)
3	कहानी	1—छोटा जादूगर (जयशंकर प्रसाद) 2—क्यों क्यों लड़की (महाश्वेता देवी) 3—हार की जीत (सुदर्शन) 4—ईदगाह (प्रेमचन्द) 5—साप्ताहिक धमाका (डॉ0हरिकृष्ण देवसरे) 6—छिपा रहस्य (क्वेंटीन रेनाल्ड)	1—राजधर्म (जातक कथा से) 2—शापमुक्ति (रमेश उपाध्याय) 3—भविष्य का भय (अन्नपूर्णा देवी)	1—काकी (सियारामशरण गुप्त) 2—अपराजिता (शिवानी) 3—दुःख का अधिकार (यशपाल)
4	एकांकी	1—बहादुर बेटा (विष्णु प्रभाकर)	1—कर्तव्य पालन (रामनरेश त्रिपाठी)	1—जूलिया (अन्तोन चेखोव)
5	यात्रावृत्तांत	1—हिन्द महासागर में छोटा सा हिन्दुस्तान (रामधारी सिंह दिनकर)	1—मेरी यूरोप यात्रा (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद)	1—अमरकंटक से डिंडौरी (अमृतलाल बेगड़)
6	आत्मकथा	——	1—मैं कवि कैसे बना (गोपाल प्रसाद व्यास)	1—मेरी माँ (रामप्रसाद बिस्मिल)
7	पत्र	1—अमर शहीद भगतसिंह के पत्र (भगतसिंह)	——	1—एक स्त्री का पत्र (रवीन्द्रनाथ टैगोर)

कविता—

कविता मानवीय भावों की सहज अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में मानव मन की अन्तर्निहित पीड़ाओं, आकांक्षाओं तथा मनोभावों का छन्दोवृद्ध एवं अलंकारिक प्रकटीकरण ही कविता है। अनादिकाल से कवि कविता के माध्यम से युग जीवन को अभिव्यक्त करता आया है। इसमें सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की ऐसी अलौकिक रसधार प्रवाहित होती है जो अपने सम्पर्क में आए हुए को एक समान आनन्दित करती चलती है। यह न केवल युग सत्य को प्रतिभाषित करती वरन् समाज को एक नई दिशा और एक नई चेतना भी प्रदान करती है। मानवीय गुणों का परिष्कार भी करती है। कबीर, सूर, तुलसी, रहीम, प्रसाद, पन्त, दिनकर जैसे महान कवियों की रचनाएँ इस कथन की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है।

कविता में रस, छन्द और अलंकार भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इसमें जहाँ तक रस की बात कही जाय तो—साहित्य के आचार्यों ने रसात्मक वाक्य को ही काव्य कहा है। काव्य प्रकाश के रचयिता आचार्य मम्मट के अनुसार विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव द्वारा व्यक्त स्थायी भाव रस कहलाता है। (भाव ही रस का आधार है। मन के विकास भाव कहलाते हैं। भाव का आश्रय हृदय होता है। ये स्थायी

Downloaded From **www.dietmathura.org**

भाव के रूप में वासना के रूप में मानव हृदय में सदा विद्यमान रहते हैं।) प्रत्येक स्थायी भाव का एक निर्धारित रस है। जिसे इस प्रकार देखा जा सकता है—

स्थायी भाव	**रस**
1. रति	1. श्रृंगार
2. हास	2. हास्य
3. शोक	3. करूणा
4. उत्साह	4. वीर
5. क्रोध	5. रौद्र
6. भय	6. भयानक
7. जुगुप्सा	7. वीभत्स
8. आश्चर्य (विस्मय)	8. अद्‌भुत
9. निर्वेद	9. शान्त

वस्तुतः कविता और रस दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। बिना रस के कविता नहीं, बिना कविता के रस नहीं। काव्य का रस काव्यानन्द कहलाता है।

छन्द कविता में सक्रियता और प्रभावशीलता लाता है। हमारी अनुभूतियों को लययुक्त, संगीतात्मक, सुव्यवस्थित और नियोजित करता है। छन्द कविता को स्मरणीय बना देता है। इसके तीन प्रमुख तत्व होते हैं—

1. मात्राओं और वर्णों की विशेष क्रम से योजना।
2. गति और यति के विशेष नियमों का पालन।
3. पाद या चरण।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार कहते हैं। इसके प्रयोग शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है। अतः अलंकार को काव्य का आवश्यक अंग माना गया है। लेकिन यहाँ यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि वे आवश्यक तत्व के रूप में ही हैं, अनिवार्य तत्व के रूप में नहीं। अभिप्राय यह है कि काव्य में काव्यत्व अलंकारों के अभाव में भी हो सकता है। अतः अलंकारों के ही काव्य का सर्वस्व नहीं समझना चाहिए। वे काव्य के साधन हैं साध्य नहीं। आचार्य मम्मट ने भी अपनी काव्य की परिभाषा में अलंकारों की स्थिति अनिवार्य नहीं मानी है, उन्होंने 'पुनःक्वापि' कहकर अलंकारों से रहित काव्य में भी काव्यत्व माना है।

काव्य—साहित्य का इतिहास—

हिन्दी काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों को जानने और समझने के लिए हमें उसके आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास पर दृष्टि डालनी होगी। हिन्दी साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने मुख्यतः चार भागों में बाँटा है। यह विभाजन युग विशेष की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया है, जो इस प्रकार है—

(1) आदिकाल (वीरगाथा काल)	—	संवत् 1050 — 1375
(2) भक्तिकाल	—	संवत् 1375 — 1700
(3) रीतिकाल	—	संवत् 1700 — 1900
(4) आधुनिककाल	—	संवत् 1900 — अब तक

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

1–आदिकाल–काल विभाजन के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य के प्रथम काल को आदिकाल या वीरगाथा काल कहा जाता है। इस काल की कविता का मुख्य विषय वीर पुरुषों का यथोगान और वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी मिलता हैः इसे लक्ष्य कर इस युग का नाम 'वीरगाथा' काल दिया गया। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तयाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं–

1. आश्रयदाताओं की प्रशंसा।
2. राष्ट्रीयता की भावना का अभाव।
3. युद्धों का सजीव वर्णन।
4. वीर रस एवं श्रृंगार रस की प्रधानता।
5. ऐतिहासिक वृत्तों में कल्पना की प्रबलता।
6. छन्दों की विविधता।
7. काव्य में अपभ्रंश, डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग।

2–भक्तिकाल–भक्ति काव्य की प्रधानता के कारण विद्वानों ने 14वीं शताब्दी से 17वीं शताब्दी तक के काल को भक्ति काल कहकर सम्बोधित किया। इस समय की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं–

1. ईश्वर में सहज विश्वास।
2. नाम स्मरण की महत्ता।
3. ज्ञान की महत्ता।
4. गुरु महिमा।
5. अहंकार का परित्याग।
6. जाति–पाँति का विरोध।
7. लोकमंगल की भावना।
8. समन्वय की भावना।
9. सत्संग का महत्व।
10. आडम्बर का खण्डन।

3–रीतिकाल–हिन्दी साहित्य के विद्वान इतिहास लेखक 17 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी के बीच के साहित्य को रीतिकाल कहकर पुकारते हैं। काल विभाजन में यह नाम विवादास्पद ही रहा है और इस विवाद के बीच 'रीतिकाल' तथा 'श्रृंगार काल' में दो नाम सामने आये। इस काल के कवियों को रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त वर्ग के अन्तर्गत बाँटा गया है। इस काल की कुछ प्रमुख विशेषताएँ/प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं–

1. रीतिग्रन्थों का निर्माण।
2. श्रृंगार रस की प्रमुखता।
3. प्रकृति चित्रण।
4. अलंकरण का प्राधान्य।
5. मुक्तक शैली की प्रधानता।
6. व्रजभाषा की प्रधानता।
7. चमत्कार प्रदर्शन।

Downloaded From www.dietmathura.org

4–आधुनिक काल–हिन्दी काव्य के आधुनिका काल को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता में क्रमशः विभाजित किया गया है। प्रत्येक युग की अपनी कुछ खास प्रवृत्तियाँ हैं जो दूसरे युग से उसे पृथक करती हैं। जैसे–भारतेन्दु युग में जहाँ कविता में राष्ट्रीयता की भावना की प्रबलता थी तो द्विवेदी युग में इसके साथ ही खड़ी बोली में प्रयोग किये गये। छायावाद में सूक्ष्म कल्पना एवं प्रकृति चित्रण की प्रधानता रही तो प्रगतिवाद में सामाजिक यथार्थता पर बल दिया गया। प्रयोगवाद में जहाँ प्रयोग के लिए प्रयोग किये गये वही नई कविता में मानव मन की निराशा तथा अन्य विषयों का वैविध्य मिलता है।

कविता शिक्षण के उद्देश्य–डॉ0 रामशकल पाण्डेय के अनुसार कविता शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्यों पर ध्यान देना अध्यापक के लिए आवश्यक है–

1. लय, ताल एवं भाव के अनुसार कविता पाठ करना।
2. कविता में रूचि उत्पन्न कर काव्य रचना के लिए प्रोत्साहित करना।
3. सहानुभूति क्षेत्र के विस्तार एवं उदात्त भावों के उत्पादन एवं संवर्द्धन द्वारा उन्हें सन्तुलित एवं लोक कल्याणकारी चरित्र के निर्माण की प्रेरणा देना।
4. कवि के भावों एवं विचारों के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित कराके अलौकिक आनन्द की अनुभूति करना।
5. कवि के भावों, कल्पनाओं तथा अभिव्यक्तियों के सौन्दर्य की परख की योग्यता उत्पन्न करना।
6. भाव–भंगिमाओं तथा स्वर के उतार–चढ़ाव के साथ कविता–पाठ का अभ्यास कराना।
7. विविध कविता शैलियों का परिचय कराके उन्हें अपने योग्य शैली के विकास में सहायता देना।
8. साहित्य के साथ परिचय कराते हुए उसमें बालकों की ऐसी स्थायी रूचि का विकास करना जिससे उनमें स्वाध्यायशीलता उत्पन्न हो।

कविता शिक्षण की विधियाँ–डॉ0 पाण्डेय ने कविता शिक्षण।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

पाठ–5
पात नये आ गये

उद्देश्य–

- विद्यार्थियों के मन में प्रकृति के प्रति प्रेम तथा सौन्दर्य बोध जागृत करते हुए सृजनात्मक जीवन कौशल का विकास करना।
- पतझड़ के बाद पेड़–पौधों में नये कोपल निकल आते हैं जोकि नयी शुरूआत का प्रतीक है। प्रकृति के इन परिवर्तनों की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए बच्चों को नवसृजन के लिए प्रेरित करना।
- तुकान्त शब्दों, अलंकारों का परिचय कराते हुए बच्चों में काव्य–रचना की दक्षता विकसित करना।

पाठ परिचय–

यह कविता 'नयी कविता' के प्रसिद्ध कवि डॉ0 केदारनाथ सिंहन ने लिखी है। उन्होंने इस कविता में ग्राम–प्रकृति के सौन्दर्य का चित्रण किया है। पतझड़ के बाद पाकड़ के पेड़ की एक–एक टहनी पर टूसा या फुनगी निकल आयी है। कोयल कूक रही है। हवा के झोंके में यह स्वर प्रतिध्वनित हो रहा है। सम्पूर्ण बगीचे में नया रंग (लाल–लाल) फूट पड़ा है।

इन प्राकृतिक परिवर्तनों के माध्यम से कवि ने प्रकृति और मनुष्य के बीच स्वाभावित सम्बन्ध को उभारा है।

प्रस्तुतीकरण–

1. कक्षा 6 एवं 7 में बच्चे त्रिलोचन की कविता 'बादल चले गये वे' तथा नागार्जुन की कविता 'मेघ बजे फूले कदम्ब' पढ़ चुके हैं। पाठ पढ़ाने से पूर्व इन कविताओं के बारे में चर्चा करायें।
2. पतझड़ के बाद स्थानीय परिवेश में होने वाले परिवर्तनों के बारे में पूछताछ करें। जैसे–पेड़–पौधे में होने वाला बदलाव, पक्षियों के स्वभाव में होने वाले बदलाव।
3. यह कविता गेय है। इसे उचित लय, आरोह–अवरोह के साथ एक से अधिक बार प्रस्तुत किया जाय। पुनः पूरी कक्षा के साथ इसे दोहराया जाय।
4. कविता में बसंत ऋतु के आगमन पर होने वाले कुछ परिवर्तनों की बात की गयी है। बच्चों से पूछताछ करते हुए ऐसे पंक्तियों को छँटवायें। उनका भाव स्पष्ट करें। कठिन शब्दों के अर्थ, शब्दार्थ और टिप्पणी अंश में खोजने को कहें।
5. बच्चों से कविता को गद्य के रूप में लिखने को कहें यथा–पात नये आ गये–नये पत्ते आ गये।
6. अभ्यास प्रश्न 1 से 7 पर मौखिक चर्चा करते हुए उनके उत्तर कापी पर लिखने को कहें।

व्याकरण एवं शिल्प–

1. प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
2. वर्ण वर्ण के फूल खिले थे, झलमल कर हिम बिंदु मिले थे,
3. नया रंग रेशों से फूटा
   वन भींज गया
   दुहरी यह कूक, पवन झूठा

Downloaded From www.dietmathura.org

मन भींज गया

यहाँ दी गयी तीनों कविताएँ तुकान्त हैं किन्तु इनके तुकान्त वर्णों के संयोजन में भिन्नता है। बच्चों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में खोजबीन करायें।

- इस गीत में वर्णों के विन्यास में सौन्दर्य है—टहनी के टूसे, नये आ गये, डाली—डाली, आँखें आयीं, राहों में राही। ऐसे प्रयोगों से काव्य सौन्दर्य बढ़ जाता है। बच्चों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करायें।
- इस कविता में कुछ प्रयोगों के अर्थ लक्षणा से निकलते हैं। यह संकेतात्मक शब्दावली है—वन भींज गया, दुहरी यह कूक, पवन झूठा, मन भींग गया, स्वर छितरा गये, बाट जोहते आँखें आई, दिल टूट गया, राही पथरा गये। कवि ने कुछ अमूर्त (जिसका रूप न हो) का मूर्तिकरण किया है—रंग रेशों से फूटा, मन भीज गया, स्वर छितरा गये, दिल अूट गया। इनके अर्थ कई तरह के सन्दर्भों से जोड़कर स्पष्ट करें।
- कविता में शब्दों के विशेष प्रयोग से सौन्दर्य उत्पन्न किया गया है यथा—टहनी के टूसे, पकड़ी के पात, राहों मे राही। इन पंक्तियों को ट, प, र वर्णों की आवृत्ति से अलंकृत किया गया है। पाठ में दिये गये अभ्यास प्रश्न—9 पर कार्य करते समय बच्चों का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते हुए अनुप्रास अलंकार की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

योग्यता विस्तार—

- बसंत ऋतु से सम्बन्धित अन्य कवितायें संकलित कर बच्चों को पठन के लिए उपलब्ध करायें।
- पाठ में शब्दों की सहायता से कविता बनाने संबंधी अभ्यास किया गया है। इसी प्रकार वर्षा एवं शीत ऋतुओं से संबंधित शब्दों को देकर कविताएँ बनाने का अभ्यास करायें।

निबन्ध—'निबन्ध' गद्य साहित्य की मुख्य विधा के रूप में माना जाता है। इसे गद्य की कसौटी भी कहा गया है। 'निबन्ध' शब्द पुराना होते हुए भी एक साहित्यिक विधा के रूप में इसकी शुरूआत पत्रकारिता के उदय के साथ हुई। दूसरे शब्दों में निबन्ध आधुनिक युग की देन है। हिन्दी साहित्य का 'भारतेन्दु युग' जो 'नवजागरण काल' के रूप में भी पाया जाता है, उसी से हिन्दी गद्य की विविध विधाओं का सुसंस्कारित रूप प्रारम्भ होता है, जिसमें निबन्ध प्रमुख है। हिन्दी में प्रयुक्त निबन्ध शब्द अंग्रेजी के 'एसे' का समानार्थी है। 'एसे' शब्द का अर्थ है—मुक्त, स्वच्छन्द।

परिभाषा—फ्रेंच लेखक मॉण्टेन का विचार है कि निबन्ध विचारों, उद्धरणों और आख्यान वृत्तों का सम्मिश्रण है। अंग्रेजी के निबन्धकार बेकन ने निबन्ध लेखन में विचार पक्ष को महत्व दिया है। उनके अनुसार 'निबन्ध कुछ गिने—चुने पृष्ठों के लघु विस्तार मे होना चाहिए जिसमें सारगर्भित विचारों का ठोस निर्देश हो।' डॉ0 जॉनसर के अनुसार 'निबन्ध मानसिक जगत ढीला—ढाला बुद्धि विलास है, जिसमें न तारतम्यता होती है और नियमितता। यह अपरिपक्व विचार—खण्ड होता है।'

हिन्दी के विद्वानों की मान्यता अंग्रेजी के विद्वानों से थोड़ी अलग है। वे निबन्ध को गम्भीर सुसम्बद्ध एवं व्यवस्थित रचना मानते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार—'आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबन्ध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो।' इसे और स्पष्ट करते हुए शुक्ल जी कहते हैं कि व्यक्तिगत विशेषता का यह मतलब नहीं कि उसके प्रदर्शन के लिए विचार की श्रृंखला रखी ही न जाय या जानबूझकर जगह—जगह से तोड़ दी जाय।'

Downloaded From www.dietmathura.org

बाबू गुलाबराय के अनुसार ''निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।''

डॉ0 भगीरथ मिश्र ने भी बाबू गुलाबराय के विचारों को स्वीकार करते हुए निबन्ध को इस प्रकार स्पष्ट किया है–''निबन्ध वह गद्य रचना है जिसमें लेखक किसी भी विषय पर स्वच्छन्दतापूर्वक परन्तु एक विशेष सौष्ठव संहिति, सजीवता और वैयक्तिकता के साथ अपने भावों, विचारों और अपने अनुभवों को व्यक्त करता है।''

विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा के आलोक में निबन्ध की कुछ प्रमुख विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है–

- निबन्ध मुख्यतः आत्माभिव्यक्ति से सम्बन्धित होता है, अतः यह निबन्धकार के व्यक्तित्व का परिचायक होता है।
- संक्षिप्तता, पूर्णता और एकतानता निबन्ध शैली की निजी विषेषता है। विषय को अनावश्यक विस्तार देने से उसकी एकरसता खण्डित हो जाती है।
- निबन्ध विचारपूर्ण रचना है, किन्तु उसमें हृदय के भावसत्त का ही साम्राज्य होता है।
- रोचकता, सजीवता, भाषा की प्रौढ़ता और शैली की प्रांजलता निबन्ध के लिए आवश्यक है।
- निबन्ध में बहुत सी बातों का संग्रह किया जा सकता है, किसी सिद्धान्त विशेष का प्रतिपादन नहीं।

निबन्ध के भेद–स्थूल रूप से निबन्ध के दो भेद होते हैं–1. विचार प्रधान 2. भाव प्रधान

परन्तु विषय और शैली के आधार पर समवेत रूप में निबन्ध के निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं–

1. विचार प्रधान।
2. भाव प्रधान।
3. प्रतीकात्मक।
4. मनोवैज्ञानिक।
5. कथात्मक।
6. संस्मरणात्मक।
7. हास्य–व्यंग्यात्मक।
8. वर्णनात्मक।
9. ललित निबन्ध।

निबन्ध साहित्य का विकास हिन्दी गद्य साहित्य के विकासक्रम से जुड़ा हुआ है। इसे इस प्रकार देखा जा सकता है–भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर युग।

भारतेन्दु और उनके सहयोगियों ने निबन्ध रचना का आरम्भ किया, जिसमें प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी, बालमुकुन्द गुप्त आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। भाषा के जनप्रचलित प्रयोगों, मुहावरों और उक्ति वैचित्र्य के कारण विशेष सजीव बन पड़े हैं।

Downloaded From www.dietmathura.org

द्विवेदी युगीन निबन्धों में विषयवस्तु, भाषा और शैली आदि सभी दृष्टियों से प्रौढ़ता आती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इस विधा को श्रेष्ठता के शिखर तक ले जाते हैं। विशेषकर उनके भाव और मनोविकार सम्बन्धी निबन्धों का उल्लेख किया जा सकता है।

शुक्लेत्तर युग के प्रमुख निबन्धकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का विशेष स्थान है। इनके साथ ही रामविलास शर्मा, नगेन्द्र, डॉ0 सम्पूर्णानन्द आदि के नाम भी उल्लेखनीय है।

निबन्ध शिक्षण के उद्देश्य–

- शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण, उचित गति, भावानुरूप ध्वनि का आरोह–अवरोह आदि का ध्यान रखते हुए सस्वर वाचन की योग्यता का विकास करना।
- बिन्दु विशेष पर विवेचनात्मक दक्षता विकसित करने के लिए।
- पठित सामग्री के विविध तथ्यों, भावों और विचारों का प्रसंगानुकूल अर्थ ग्रहण करने के साथ मार्मिक एवं वैचारिक स्थलों की पहचान में तथा उनकी व्याख्या करने में दक्ष बनाना।
- मौलिक चिन्तन तथा अभिव्यक्ति की क्षमता को गति देने के लिए।
- साहित्यिक अभिरूचि और सृजनात्मक शक्ति विकसित करना।
- भाषिक योग्यता के विकास हेतु।
- क्रमबद्ध एवं तार्किक चिन्तन की योग्यता विकसित करना।

शिक्षण प्रक्रिया–सामान्यतः निबन्ध की शिक्षण प्रक्रिया में निम्नलिखित सोपान आवश्यक हैं–

1. प्रस्तावनां
2. वाचन (आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, मौन वाचन)
3. बोध प्रश्न अथवा केन्द्रीय भाव परीक्षण
4. भाषा अध्ययन
5. विश्लेषण।
6. पुनरावृत्ति प्रश्न।

www.dietmathura.org

Downloaded From **www.dietmathura.org**

पाठ–6
क्या निराश हुआ जाय

उद्‌देश्य–

- बच्चों में आशावादी, सकारात्मक दृष्टिकोण सम्बन्धी जीवन कौशल का विकास करना।
- आंतरिक गुणों को विकसित करके सार्थक दिशा की ओर प्रेरित करना।
- निबन्ध के कथ्य और शिल्पगत ढाँचे से परिचित कराते हुए, उनमें निबन्ध रचना का कौशल विकसित करना।
- शब्दों के वाक्य प्रयोग, वाक्यों के प्रकार तथा संज्ञाभेदों से परिचित कराते हुए इनके व्यावहारिक प्रयोग की दक्षता विकसित कराना।

पाठ परिचय–

इस पाठ के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी सुप्रसिद्ध समीक्षक, उपन्यासकार और निबन्धकार हैं। उन्होंने भारतवर्ष की वर्तमान स्थिति को देखकर प्रश्न उठाया है कि क्या निराश हुआ जाये? आज बेईमान, धोखेबाज और चरित्रहीन लोग ही फल–फूल रहे हैं। हर तरफ इसी प्रकार के लोगों को देखकर सामान्य लोगों का विश्वास, ईमानदारी, परिश्रम, कर्तव्यनिष्ठा से उठता जा रहा है। आदर्श टूट रहा है। बेईमानी बढ़ रही है। ऐसे में क्या निराश हुआ जाये?

लेख कइस स्थिति से निराश नहीं होना चाहता। मनुष्य की गलत नीतियों के कारण आज के समाज में गिरावट आयी है। दया, सहयोग, परिश्रम आदि सद्‌गुण आज भी लोगों में पाये जाते हैं। आज भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई आदि हमारे जीवन के आदर्श बने हुए हैं। हमारे मन में भ्रष्टाचार के प्रति क्रोध है। समाज में ईमानदार लोग हैं, इसलिए निराश होने की बात नहीं है। आशा का प्रकाश बुझा नहीं है। आशावादी सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

प्रस्तुतीकरण–

- पूर्व में पढ़े गये पाठों (सत्साहस, मेरी तीर्थयात्रा) की ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ। उन पाठों में छिपे हुए संदेशों, जीवन मूल्यों पर चर्चा करते हुए पाठ की शुरूआत करें।
- शुद्‌ध उच्चारण तथा विराम–चिह्नों का ध्यान रखते हुए स्वयं सस्वर वाचन करें। कुछ बच्चों से भी अनुकरण वाचन कराएँ।
- निबन्ध का मौन वाचन कराएँ पूरे पाठ का एक साथ वाचन कराना ठीक नहीं होगा। विचार एवं घटना प्रसंगों के अनुसार तीन या चार भागों में बाँटना उचित होगा।
- मौन वाचन के समय कठिन शब्दों के अर्थ, शब्दार्थ, टिप्पणी अंश को खोजने को कहें। आवश्यकतानुसार नये शब्दों के साथ वाक्य प्रयोग भी कराएँ।
- निबन्ध में लेखक द्वारा कुछ प्रश्न उठाये गये हैं, जैसे–दोष किसमें नहीं होते ? क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था ? पाठ में ऐसे प्रश्नों को चिह्नित करायें तथा उनमें से कुछ पर बच्चों से चर्चा करायें। प्रमुख अंशों के कथनों/विचारों को उभारें।

Downloaded From www.dietmathura.org

- निबन्ध में अपनी बात को पुष्ट करने के लिए रचनाकार ने दो घटनाओं का वर्णन किया है। बच्चों से उनके आस–पास होने वाली ऐसी घटनाओं के बारे में सुनें तथा उन घटनाओं में निहित संदेशों के बारे में भी चर्चा करें। बच्चों की राय जानी जाय।
- अभ्यास प्रश्न 1 से 6 तक प्रश्नों का उत्तर बच्चों को स्वयं खोजने दें। उन्हें एकदूसरे से पूछताछ की छूट होनी चाहिए। प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने का कार्य पाठ के वाचन के साथ–साथ कराया जाना उपयुक्त होगा।
- इस निबन्ध में कुछ वाक्य ऐसे भी हैं, जो सूत्र वाक्य के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यथा–
  ''व्यक्ति चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता।''
  ''दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है।''
  पाठ में आये हुए ऐसे वाक्यों की खोजबीन करायें तथा उनके भाव को स्पष्ट करें।
- पाठ का शीर्षक है: क्या निराश हुआ जाये ? इस पर चर्चा करें/करायें–
  – व्यक्ति निराश क्यों होता है ?
  – इस पाठ में निराश न होने के पीछे कौन से दृष्टान्त/उदाहरण दिये गये हैं ?
  – इस शीर्षक से बच्चे कहाँ तक सहमत हैं ?
  चहें, तो इस शीर्षक के पक्ष–विपक्ष में वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन भी कर सकते हैं।

व्याकरण और शिल्प–

- भाषा अध्ययन शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये प्रश्न–1 के अनुसार शब्दों का वाक्य प्रयोग कराएँ। इस पाठ के अभ्यास में दिये गये शब्दों के अतिरिक्त ढेर सारे शब्द हैं। इन शब्दों को छँटवाएँ तथा बच्चों की समझ को पुष्ट करने के लिए इनका वाक्य प्रयोग करवाएँ। यथा–

ठग	–	ठगी
डकैत	–	डकैती
चोर	–	चोरी
तस्कर	–	तस्करी
सुख	–	सुखी
गुण	–	गुणी

- प्रश्न–2 में वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों के आधार पर संज्ञा शब्दों को स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार के और वाक्य पाठ में छँटवाएँ और संज्ञा के प्रकारों को स्पष्ट करें। बच्चों को परिभाषाएँ तभी लिखवायें जब वे शब्दों के प्रयोग में दक्ष हो जाएँ।
- सरल, मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों की पहचान हेतु पाठ दो में किये गये अभ्यास की पुनरावृत्ति करते हुए अभ्यास कराएँ। पाठ में और उदाहरण छँटवाएँ।
- निबन्ध विचार प्रधान रचना होती है जिसमें विचारों को तार्किकता के क्रम में रखकर एक निर्णय तक पहुँचा जाता है। बीच–बीच में विचार की पुष्टि के लिए कुछ उदाहरण/दृष्टान्त भी प्रयोग किये जाते हैं।
- इस निबन्ध की इन विशिष्टताओं के प्रति बच्चों का ध्यान आकृष्ट कराएँ।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

शब्द–

- इस पाठ में 'कर' प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाये जाते हैं, जैसे–कष्टकर। ऐसे अन्य शब्दों को छात्रों से बनवाइए।

समास–

क. इस पाठ में सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है। इन समासों के बारे में बनाते हुए दिए गये सामासिक पदों में समास का विग्रह कराइए–

द्वन्द्व समास = आरोप–प्रत्यारोप, लोभ–मोह, काम–क्रोध, मारने–पीटने

तत्पुरुष समास = मनुष्य निर्मित, व्यक्ति–चित्त, भयभीत, लोक–चित्त

ख. पाठ सं0 12 और 14 में आये उपयुक्त समासों के उदाहरणों को छात्रों से छँटवाकर लिखवाएँ और समास विग्रह भी कराएँ। यह कार्य समूहों में दिया जाय तो ठीक रहेगा। बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण कराएँ।

पद बंध–

1. इस पाठ में 'समझा जाता है' जैसी कई संयुक्त क्रियाएँ अथवा क्रियापद–बन्ध प्रस्तुत हुए हैं। इन्हें स्पष्ट करते हुए नीचे दिये गये वाक्यों में क्रियाकलाप छँटवायें–

   क. आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया।

   ख. आज एकाएक कानून और धर्म में अन्तर कर दिया गया है।

   ग. धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता।

2. नीचे के वाक्य में 'पिस रहे हैं', 'फल फूल रहे हैं' का प्रयोग हुआ है। इनका भाव छात्रों को समझाएँ–

   क. यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके अजीविका चलाने वाले गिरोह और भोले–भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल–फूल रहे हैं।

   ख. बच्चों से अपने वाक्यों में प्रयोग हेतु बड़े समूह में चर्चा कराएँ।

योग्यता विस्तार–

- बच्चों से निबन्ध लिखवाएँ–

  – अपने आस–पास की ऐसी किसी घटना के बारे में जो उनके हृदय को छू गई हो।

  – की गयी यात्राओं के बारे में।

  – आस–पास के किसी विशिष्ट जन के बारे में।

मूल्यांकन–

- निबन्ध के संबंध में पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों का मत स्पष्ट है।
- निबन्ध की प्रमुख विषेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- निबन्ध शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं ?

–0–

Downloaded From www.dietmathura.org

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org